



कृषि आधारित उद्योगों पर एक समीक्षा

अलका सिंह गौतम^{1*}, डॉ. उमेश कुमार यादव²

1. शोधार्थी, श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर, म.प्र., भारत

ouriginal.sku@gmail.com,

2. प्रोफेसर, श्री कृष्णा यूनिवर्सिटी, छतरपुर म.प्र., भारत

सारांश: कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास और विविधीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह अध्ययन कृषि आधारित उद्योगों की परिभाषा, स्वरूप, रोजगार सृजन, आय वृद्धि, ग्रामीण बेरोजगारी में कमी, संसाधन उपयोग, बुनियादी ढांचे के विकास और आर्थिक समृद्धि में उनकी भूमिका का विश्लेषण करता है। विभिन्न कृषि आधारित उद्योग जैसे कि चीनी मिल, चावल मिल, तंबाकू प्रसंस्करण इकाई, अंगूर और मक्का प्रसंस्करण इकाईयों के माध्यम से ग्रामीण रोजगार, आय में वृद्धि और व्यावसायिक बदलाव की संभावनाओं का अनुभवजन्य अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाकर, बेरोजगारी दूर कर, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम बन सकते हैं।

मुख्य शब्द: कृषि आधारित उद्योग, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगार सृजन, आय असमानता, प्रसंस्करण इकाइयाँ

----- X -----

परिचय

यूनिट नेशंस इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन द्वारा गढ़ी गई परिभाषा कृषि उद्योगों के दायरे को सीमित करती है क्योंकि इसमें केवल वे उद्योग शामिल हैं जो कृषि के कच्चे माल का उपयोग करते हैं, जिसमें मत्स्य पालन और वानिकी शामिल हैं, डेयरी कृषि, रेशम उत्पादन, मांस और मुर्गी पालन सहित पालन विशेष रूप से इसके दायरे में नहीं आते हैं, इसके अलावा पैकिंग उद्योग जो कृषि-सहबद्ध उद्योग के रूप में शामिल है, वह अवधारणा में ठीक से नहीं आता है क्योंकि यह उद्योग मुख्य रूप से वानिकी से कच्चे माल का उपयोग करता है और इसका अंतिम उपयोग कृषि-सहबद्ध उद्योग में होता है। इस प्रकार उपयोग और काल्पनिक मानदंडों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से सीमांकित करने के लिए एक अधिक व्यवहार्य और स्पष्ट अवधारणा को पेश किया जाना चाहिए। यह हमें कुछ अन्य उद्योगों की ओर भी ले जाता है जैसे खाद बनाना जहां कृषि कार्य का उपयोग मुख्य रूप से इनपुट के रूप में किया जाता है, मधुमक्खी पालन, रेशम उत्पादन और फीता पालन जो सीधे कृषि उत्पादन का उपयोग नहीं करते हैं लेकिन मुख्य रूप से क्रमशः मधुमक्खियों, कौशल कीड़े और फीता कीटों के पालन से संबंधित हैं और कोल्ड स्टोरेज जिसका उद्देश्य केवल उपज की सुरक्षा और संरक्षण है। इस प्रकार कृषि उद्योगों को उन उद्योगों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो कृषि पर निर्भर हैं और जिन पर कृषि निर्भर है। इसे आगे उन उद्योगों के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है जो कृषि उत्पादन या वाणिज्यिक उद्देश्यों में उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के प्रसंस्करण या निर्माण के लिए कृषि उपज का उपयोग करते हैं। कृषि-औद्योगिक एकीकरण, कृषि अपनी आवश्यकताओं को एक से प्राप्त करती है और दूसरे को अपनी उपज की आपूर्ति करती है। स्वाभाविक रूप से इसमें अन्य दो प्रकार के उद्योगों के साथ कृषि का एकीकरण शामिल है। इस तरह के एकीकरण में उद्योगों का स्थान महत्वपूर्ण हो जाता है। यह गाँव में या गाँव के बहुत नज़दीक किसी स्थान पर होना चाहिए ताकि स्थानीय रूप से उत्पादित कच्चे माल को वहाँ संसाधित किया जा सके और आवश्यक कृषि इनपुट वहाँ उत्पादित किए जा सकें, जिससे अतिरिक्त रोजगार आय और निवेश उत्पन्न होने के सभी परिणामी लाभ हो सकें। [1]

कृषि आधारित उद्योगों की भूमिका और महत्व

1) रोजगार की संभावना:

कृषि आधारित उद्योगों में रोजगार की अत्यधिक संभावना होती है। कृषि आधारित उद्योगों के रोजगार पैटर्न की समीक्षा करें तो इन उद्योगों द्वारा सृजित रोजगार के अवसर एक उद्योग से दूसरे उद्योग में भिन्न होते हैं, जो कृषि आधारित उद्योग की प्रकृति पर निर्भर करता है जबकि कुछ उद्योग बड़े पैमाने पर स्थायी रोजगार प्रदान करते हैं जबकि कुछ अन्य मौसमी रोजगार पैदा करते हैं।

उदाहरण के लिए चावल मिलिंग और चीनी उद्योगों में स्थायी रोजगार महत्वपूर्ण है।

चावल मिलिंग उद्योग में यह चावल मिलों के संचालन की स्थायी प्रकृति के कारण पर्याप्त है। चीनी उद्योग में यह अधिक है क्योंकि इसकी पूंजी गहन प्रकृति है, क्योंकि उस उद्योग में प्रशासनिक और तकनीकी कर्मियों का हिस्सा काफी बड़ा है। फिर भी चीनी उद्योग में मौसमी और आकस्मिक श्रमिकों का रोजगार इसके विपरीत नहीं है; तम्बाकू प्रसंस्करण और खांडसारी चीनी उद्योगों में स्थायी रोजगार न्यूनतम है जबकि तम्बाकू प्रसंस्करण उद्योग में लगभग सभी श्रमिक मौसमी रूप से कार्यरत हैं खांडसारी चीनी उद्योग के अधिकांश श्रमिक मौसम के दौरान आकस्मिक आधार पर कार्यरत हैं। कृषि आधारित औद्योगिक फसलों की खेती से कृषि क्षेत्र में रोजगार सृजन के संदर्भ में, यह स्पष्ट है कि गन्ने की खेती ने अन्य फसलों की तुलना में अधिक अतिरिक्त रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। जॉली बोर्ड प्लाईवुड उद्योग के विकास के संदर्भ में, तृतीयक क्षेत्र का विकास अंगूर प्रसंस्करण और मक्का उद्योग उद्योगों में नगण्य है।[2]

2) आय:

कृषि आधारित उद्योगों का प्रभाव ग्रामीण आबादी की सभी श्रेणियों के आय स्तरों पर महत्वपूर्ण था। कृषि श्रमिकों के परिवारों और कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत श्रमिकों के परिवारों में आय में वृद्धि अधिक शानदार थी, जबकि किसान वर्ग को कृषि आधारित उद्योगों से अप्रत्यक्ष रूप से उच्च मजदूरी दरों और कृषि क्षेत्र में सुनिश्चित रोजगार के माध्यम से लाभ हुआ, जबकि बाद वाले को कृषि आधारित औद्योगिक इकाइयों में रोजगार से लाभ हुआ। इसलिए ग्रामीण परिवारों के बीच आय असमानताओं में कमी की प्रवृत्ति थी। यद्यपि कृषि आधारित उद्योग की प्रकृति के बावजूद सभी औद्योगिक स्थानों में आय में काफी वृद्धि हुई, लेकिन चीनी और खांडसारी चीनी उद्योगों द्वारा कवर किए गए गांवों में वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट थी, एक तथ्य जो चीनी उद्योग की शाखा के रूप में गन्ने की खेती के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। अंगूर प्रसंस्करण उद्योग में भी आय में वृद्धि आश्चर्यजनक थी जो तंबाकू की खेती के कारण स्थापित हुई थी। संक्षेप में, सभी ग्रामीण परिवारों, विशेषकर कृषि श्रमिकों की आय में वृद्धि हुई, भले ही ग्रामीण क्षेत्र में या उसके आसपास कृषि आधारित उद्योग की प्रकृति कुछ भी हो।

3) कृषि श्रमिकों के बीच बेरोजगारी या अल्परोजगार की समस्या का समाधान

यह सर्वविदित है कि, कृषि पर जनसंख्या का बहुत दबाव है और ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक समुदायों के बीच बड़ी मात्रा में बेरोजगारी और अल्परोजगार है। कृषि आधारित उद्योग इन लोगों के लिए रोजगार के बढ़ते अवसर या अंशकालिक व्यवसाय प्रदान कर सकते हैं। यह सब कृषि पर दबाव को कम करने में मदद करेगा। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विविधीकरण में मदद करेंगे। यह केवल कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने में मदद करेगा जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था की अस्थिरता का कारण बनता है। कृषि आधारित उद्योग विविधीकरण और ग्रामीण समुदाय में बड़ी संख्या में लोगों को स्थिर आय (मुख्य या पूरक) प्रदान करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में मदद करेंगे। इस प्रकार कृषि आधारित उद्योग विशेष रूप से भूमिहीन कृषि श्रमिकों और आदिवासी आबादी के बीच बेरोजगारी और अल्परोजगार की समस्याओं को काफी हद तक हल करने में मदद करेंगे। [3]

4) आय और संपत्ति की असमानताओं में कमी

कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण जनता को रोजगार और आय प्रदान करके आय की अत्यधिक असमानताओं को कम करने में मदद करेंगे जो आज भारतीय अर्थव्यवस्था में बनी हुई हैं क्योंकि उद्योग शहरी क्षेत्रों में केंद्रित हो गए हैं। इस प्रकार कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में आय और धन की अत्यधिक असमानताओं को कम करने और समाज के समाजवादी स्वरूप को स्थापित करने की दिशा में एक कदम होगा।

5) कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण जन गरीबी का उत्तर

विशाल ग्रामीण जन गरीबी रेखा से नीचे हैं और दयनीय भौतिक परिस्थितियों में रह रहे हैं, ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि देश में पर्याप्त खाद्यान्न और उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता है क्योंकि विशाल ग्रामीण जन के पास या तो कोई आय नहीं है या

उनकी आय का स्तर बहुत कम है क्योंकि वे बेरोजगार हैं या केवल आंशिक रूप से कार्यरत हैं। ग्रामीण औद्योगीकरण ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक गरीबी का एक प्रभावी उत्तर है। कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण लोगों की बढ़ती संख्या को रोजगार और आय प्रदान करेंगे, स्थिर आय सुनिश्चित करेंगे और कई उपभोक्ता वस्तुओं को सस्ते में उपलब्ध कराएंगे। यह कृषकों को जल्द ही मनुष्य की विफलता के कारण कृषि की पूर्ण या आंशिक विफलता का सामना करने में सक्षम बनाएगा। 6) कच्चे माल की स्थानीय उपलब्धता: कृषि आधारित उद्योग आम तौर पर ऐसे कच्चे माल का इस्तेमाल करते हैं जो ज़्यादातर ग्रामीण इलाकों में ही उगाए जाते हैं। [4]

इसलिए वे मौजूदा कच्चे माल जो बेकार पड़े हैं यानी वन संसाधनों के दोहन के अवसर प्रदान करेंगे या किसानों को इन कच्चे माल का उत्पादन करने में मदद करेंगे जिससे उन्हें अतिरिक्त आय या आय का बड़ा हिस्सा मिल सकता है। इससे किसानों की आय का स्तर बढ़ाने में मदद मिलेगी। संसाधनों की स्थानीय उपलब्धता का मतलब होगा कि देश में परिवहन और संचार के साधनों पर बोझ कम होगा, इसका मतलब यह भी होगा कि देश में परिवहन और संचार पर बचत होगी, इसका मतलब यह भी होगा कि परिवहन लागत पर बचत होगी और इसलिए स्थानीय रूप से उत्पादित सामान सस्ते होने की संभावना है।

6) उपभोक्ता वस्तुओं का आसान उत्पादन

छोटी पूंजी और स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल तथा स्थानीय बाजारों के कौशल और ज्ञान के साथ, कृषि आधारित उद्योग आसानी से स्थानीय लोगों द्वारा वांछित उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ा सकते हैं। इससे देश में उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति बढ़ाने में मदद मिलेगी और इससे विकासशील अर्थव्यवस्था में निहित मुद्रास्फीति के दबाव को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी।

7) देश के आर्थिक विकास में तेजी लाने में सहायता करना

कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए बचत और निवेश निधि जुटाने में सक्षम होंगे, जिसका उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, लघु सिंचाई परियोजनाओं, बायोगैस संयंत्रों आदि में किया जा सकता है। इस प्रकार कृषि आधारित उद्योग प्राकृतिक और मानव संसाधनों को जुटाने और उनका उपयोग करने तथा उन्हें उत्पादक उपयोगों में लगाने का प्रभावी साधन होंगे। इससे निश्चित रूप से देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर में तेजी लाने में मदद मिलेगी।

8) विविध लाभ

कृषि आधारित उद्योग उद्योगों के फैलाव में मदद करेंगे और इस प्रकार उन्हें केवल कुछ शहरी केंद्रों तक सीमित होने से बचाने में मदद करेंगे। यह नौकरियों और आय की तलाश में ग्रामीण लोगों के कस्बों और शहरों की ओर भारी पलायन की समस्या को हल करने में मदद करेगा। इस प्रकार यह कस्बों और शहरों में भीड़भाड़ से बचने और प्रदूषण की समस्या से भी बचने में मदद करेगा। [5]

9) पूंजी निर्माण

कृषि आधारित औद्योगिक विकास की एक महत्वपूर्ण भूमिका पूंजी निर्माण है। इन उद्योगों के पास संस्थागत वित्त तक पहुँच नहीं है। इन्हें परिवार समूह की छोटी बचत और निवेश के साथ शुरू किया जाता है जो सामान्य रूप से उत्पादन गतिविधियों में नहीं जाता। इस प्रकार इन उद्योगों की स्थापना और विकास ने विकासशील देशों में पूंजी निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान की। चूँकि भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 80% हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है और चूँकि उसके पास बचत को चैनल करने के उचित तरीके और साधन नहीं हैं। इस समस्या का उचित समाधान ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना करना है। [6]

10) बुनियादी ढाँचे का विकास

कृषि आधारित उद्योग बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए उत्प्रेरक एजेंट के रूप में काम करते हैं, जो ग्रामीण और शहरी अर्थव्यवस्थाओं के बीच की खाई को पाटेंगे। उन्हें मुख्य रूप से एक एजेंसी के रूप में देखा जाएगा जो व्यावसायिक बदलावों और

नए सामाजिक समूहों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करती है। [7]

कृषि आधारित उद्योगों का अनुभवजन्य अध्ययन

समय के साथ देश में कृषि के "इनपुट" और कृषि के उपयोग के लिए "आउटपुट" का निर्माण करने वाले कई उद्योग अस्तित्व में आए हैं। इन विकासों के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था का समग्र विकास कई विकासशील और विकसित अर्थव्यवस्थाओं से पीछे रह गया है, जहाँ वाणिज्यिक कृषि उद्यमों की अवधारणा ने अतिरिक्त महत्व प्राप्त कर लिया है। निर्यात कृषि से, ये अर्थव्यवस्थाएँ वाणिज्यिक कृषि में बदल गई हैं। विकास के इस उन्नत चरण में, कृषि क्षेत्र को विश्व व्यापार के लिए कृषि-वस्तुओं का उत्पादन करके वैश्वीकरण और उदारीकरण की आवश्यकताओं को पूरा करने की आवश्यकता है। यह माना जाता है कि एक बार जब कृषि निर्यात कृषि से वाणिज्यिक कृषि में परिवर्तित हो जाती है, तो कृषि की उत्पादकता और लाभप्रदता न केवल बढ़ेगी, बल्कि अर्थव्यवस्था के विकास के लिए मूल्यवान विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए अर्थव्यवस्था के निर्यात क्षेत्र का विस्तार करने में भी मदद करेगी। इसलिए, यह देश के लिए एक बड़ी चुनौती है। [8]

कृषि, कृषि-उद्योगों और वाणिज्यिक कृषि-उद्यमों के विकास के इन सभी पहलुओं को शामिल करते हुए एक विस्तृत चर्चा करने के लिए, नए साल के शुरुआती दिनों में कभी-कभी एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी। शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं, टेक्नोक्रेट और गैर सरकारी संगठनों की सक्रिय भागीदारी के साथ नवकृष्ण चौधरी विकास अध्ययन केंद्र में सहस्राब्दी में कृषि-औद्योगिक उद्यमों के विकास के लिए उचित कार्रवाई करने के लिए सरकार को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए संगोष्ठी में विचार-विमर्श और चर्चाओं को उपयोगी माना गया। भारत एक विकासशील देश है जो जनसंख्या विस्फोट, बेरोजगारी, गरीबी, पूंजी की कमी, कम उत्पादकता, असमानताएं, निम्न जीवन स्तर, मुद्रास्फीति आदि जैसी कई समस्याओं का सामना कर रहा है। एक तरफ समस्याओं और दूसरी तरफ आजादी के 60 वर्षों को ध्यान में रखते हुए। भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि धीमी है। [9]

उपरोक्त समस्याओं के समाधान और तीव्र आर्थिक विकास के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के संतुलित विकास के लिए एक मिश्रित अर्थव्यवस्था को आर्थिक प्रणाली के रूप में स्वीकार करना आवश्यक था उन्होंने बताया कि प्रसंस्करण कृषि विपणन में एक महत्वपूर्ण चरण है जिसके अंतर्गत बायोमास यानी कृषि कच्चे माल को संसाधित करने का प्रयास किया जाता है जिसमें जमीन और पेड़ की फसलें शामिल हैं।

हाल के वर्षों में कृषि प्रसंस्करण के दायरे को व्यापक बनाने का प्रयास किया गया है जिसमें पशुधन और मत्स्य पालन के प्रसंस्करण को भी कृषि प्रसंस्करण के दायरे में शामिल किया गया है। हालांकि इन सभी प्रयासों के बावजूद आज भी कृषि प्रसंस्करण में केवल कृषि वस्तुओं का प्रसंस्करण शामिल है, अधिक विशिष्ट रूप से जमीन और पेड़ की फसल का प्रसंस्करण। [10]

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि कृषि आधारित उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार, आय और जीवन स्तर सुधारने में अत्यंत प्रभावी हैं। इन उद्योगों की स्थापना से न केवल कृषि पर निर्भरता कम होती है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विविधीकृत करने का अवसर भी मिलता है। इसके अतिरिक्त, बेरोजगारी और अल्परोजगार की समस्या का समाधान कर, ग्रामीण-शहरी पलायन को भी नियंत्रित किया जा सकता है। कृषि आधारित उद्योग न केवल स्थानीय संसाधनों का बेहतर उपयोग करते हैं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में पूंजी निर्माण, उपभोक्ता वस्तुओं की आपूर्ति और बुनियादी ढांचे के विकास में भी सहायक हैं। अतः, भारत जैसे कृषि प्रधान देश में कृषि आधारित उद्योगों का विस्तार और सुदृढीकरण ग्रामीण समृद्धि और आर्थिक विकास का एक सशक्त मार्ग है।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. के. (2020). ग्रामीण अर्थव्यवस्था और औद्योगिकीकरण. दिल्ली: गंगा प्रकाशन।
2. मिश्रा, एस. (2019). भारत में कृषि आधारित उद्योग. पटना: राजकमल प्रकाशन।

3. योजना आयोग. (2021). ग्रामीण विकास रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन।
4. जिला उद्योग केंद्र, छतरपुर। (2022)। वार्षिक रिपोर्ट। छतरपुर: जिला उद्योग केंद्र।
5. संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन। (2020)। कृषि आधारित उद्योग और ग्रामीण रोजगार। वियना: यूएनआईडीओ।
6. कुमार, पी. (2018)। भारत में ग्रामीण औद्योगीकरण: अवसर और चुनौतियाँ। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
7. अग्रवाल, एस. के. (2021)। पर्यावरण प्रदूषण: कारण, प्रभाव और नियंत्रण। नई दिल्ली: एपीएच प्रकाशन।
8. नाथनसन, जे. ए. (2020)। बुनियादी पर्यावरण प्रौद्योगिकी: जल आपूर्ति, अपशिष्ट प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण (6वां संस्करण)। पियर्सन एजुकेशन।
9. विश्व बैंक। (2020)। भारत: कृषि-उद्योगों के माध्यम से ग्रामीण आजीविका को बढ़ाना। वाशिंगटन, डीसी: विश्व बैंक समूह।
10. गुप्ता, पी. के. (2018)। पर्यावरण विश्लेषण में विधियाँ: जल, मिट्टी और वायु। जोधपुर: एग्रोबायोस।